भूजल संसाधन

संक्षिप्त परिचय

जिला झालावाड़

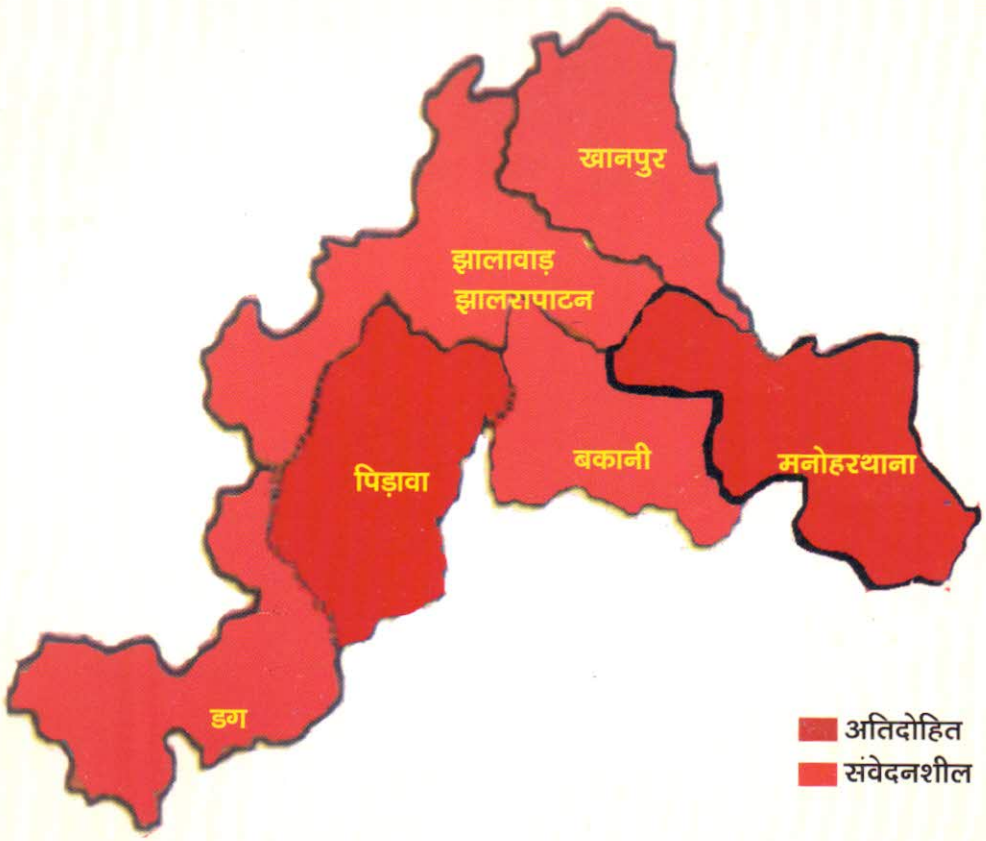

कार्यालय प्रभारी भूजल वैज्ञानिक
भूजल विभाग, झालावाड़ ☎:07432-232684

कृषि - कुओं का पुनर्भरण (प्रथम चरण)

झालावाड़ जिले का भूजल परिदृश्य

प्रस्तावना

यद्यपि पृथ्वी के तीन चोथाई भाग में जल है, फिर भी पीने योग्य जल मात्रा 2.80 प्रतिशत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक आंकलन के अनुसार पृथ्वी के समस्त जल का मात्र 0.007 प्रतिशत ही मानव जीवन के उपयोग हेतु उपलब्ध है। बढ़ती हुई जनसंख्या, शहरीकरण तथा पेयजल, उद्योग, कृषि जैसे विभिन्न उपयोगों के लिये बढती मांग के कारण स्वच्छ संसाधनो पर दबाव बढ रहा है। भूजल संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के दुष्परिणाम से भूजल स्तर में भारी गिरावट, कुओं नलकूपो के सूखने, उर्जा उपयोग में वृद्धि तथा भूजल की गुणवत्ता में गिरावट के रूप में सामने आ रहे है। हमारे देश में पिछले एक दशक से घटते जल संसाधन एक ज्वलंत समस्या के रूप में सामने आया है। इस समस्या से हमारा राजस्थान राज्य भी अछूता नहीं है। ऐसे समय में जल संसाधनो का समुचित उपयोग एवं संरक्षण करना आज की आवश्यकता ही नही बल्कि अनिवार्यता भी है।

जिला - एक परिचय

झालावाड़ जिले की 6 पंचायत समितियों को मिलाकर जिले का गठन किया गया है। यह जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण पूर्वी भाग में 6252.80 वर्ग किमी भोगोलिक क्षैत्र में फेला है। यह जिला दक्षिण पश्चिम मध्यप्रदेश राज्य एवं उत्तर एवं उत्तर पूर्व में रामगंजमण्डी, सांगोद, अटरू एवं छीपाबड़ौद तहसीले जोकि कोटा एवं बांरा जिले में सम्मिलित हैं से घिरा हुआ है।

जलवायु

जिले की जलवायु सामान्यतः शुष्क है। जिले की सामान्य औसत वर्षा (1901-2006) 964.59 मि.मी. है। वर्ष 2006 के दौरान 1315.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 36.33 प्रतिशत अधिक है। सामान्यतः जिले में दक्षिण पश्चिम मानसून से वर्षा होती है जो कि लगभग 40 वर्षा दिनों में पूर्ण होती है। विगत एक दशक में

सामान्य रूप से न होकर मूसलाधार एवं कम अवधि के लियें होने लगी है जिसके कारण इस क्षैत्र से वर्षा बाढ के रूप में बहकर जिले से बाहर निकल जाता है जिसके परिणाम स्वरूप भूजल पुनर्भरण न होने से उसके स्तर में निरन्तर गिरावट दर्ज हो रही हैं। (चित्र 1) जिले में व्यर्थ बहने वाले जल को संग्रहित कर क्षैत्र में पेयजल, सिचांई तथा औद्यगिक उपयोगी के साथ साथ, कृत्रिम भूजल पुनर्भरण हेतु काम में लिया जा सकता है।

चित्र-1: विगत दशक में झालावाड़ जिलें में मानसून वर्षा एवं औसत भूजल स्तर

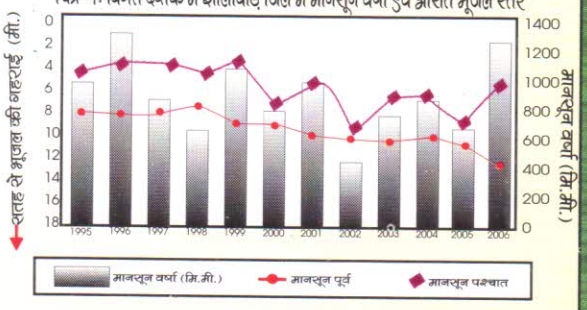

भू-आकृति

भोगोलिक दृष्टि से जिले को दो प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है जिसके अन्तर्गत दक्षिणी भाग मालवा का पठार एवं मुकन्दरा की पहाड़ियाँ सम्मिलित है। जिले में बहने वाली नदियां चम्बल की सहायक नदियां है। यह नदियां आहू, कालीसिंध, चन्द्रभागा, पिपलाज एवं उजाड़ है।

नहर सिंचित क्षैत्र

जिले में भीमसागर एवं हरिशचन्द्र सागर नहरी परियोजनाओं का नहरी क्षैत्र है जिसका क्षैत्रफल 144.93 वर्ग कि. मी. है एवं ''बलुआ पत्थर'' इस क्षैत्र में भूजल चट्टान पायी जाती है।

भूजल जितना संरक्षित रहेगा जीवन उतना सुरक्षित रहेगा